विश्वपटल पर हिन्दी

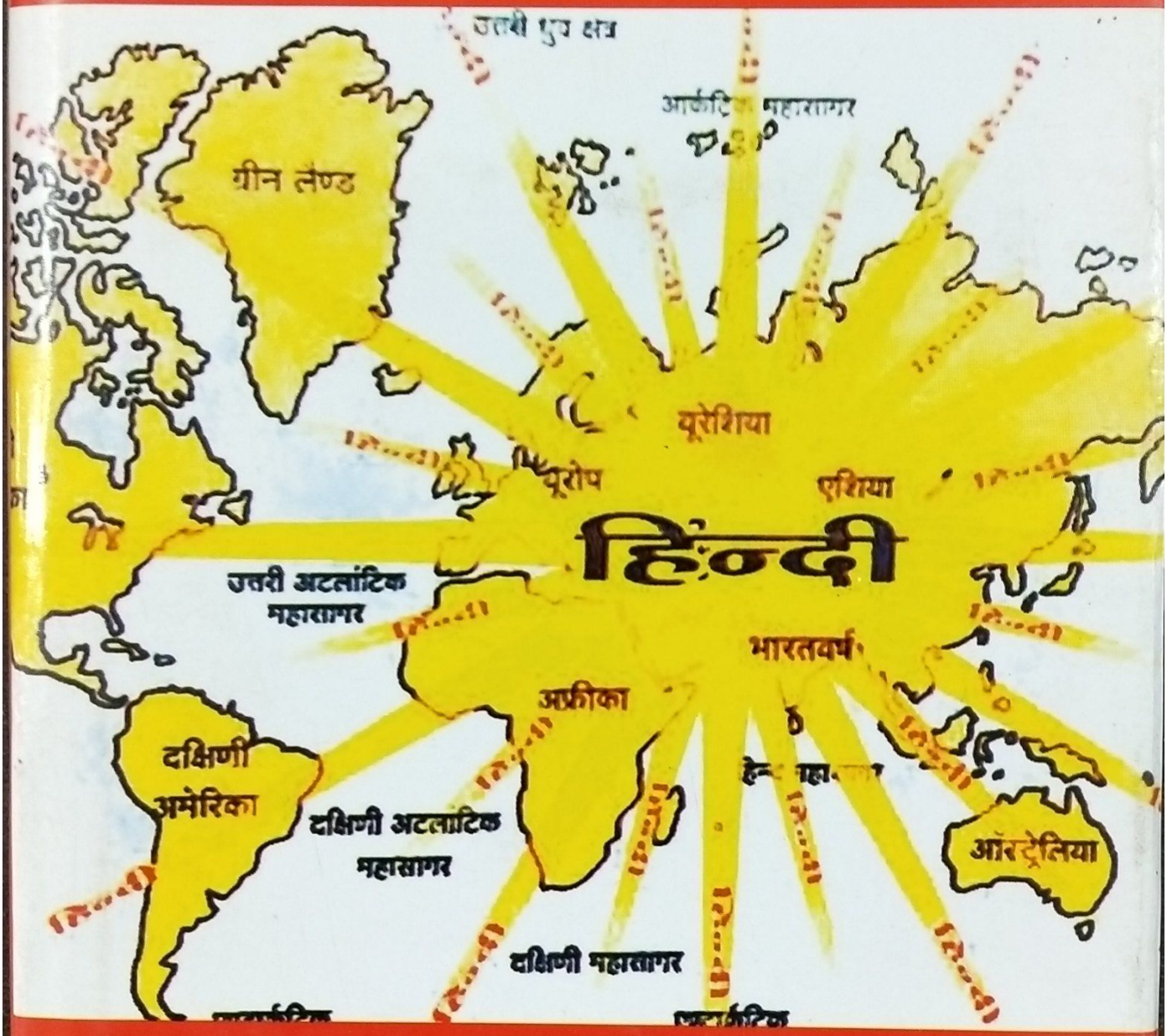

सम्पादक

डॉ. महेश 'दिवाकर'

डॉ. मीना कौल

डॉ. ऋषिपाल

डॉ. चन्द्रकान्त मिसाल

ISBN ; 978-81-89092-49-8

प्रकाशक	:	विश्व पुस्तक प्रकाशन 304-ए, बी.जी.-7 पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-63, भारत
प्रकाशन वर्ष	:	मई, 2015 ई0
मूल्य	:	₹550
सर्वाधिकार	:	अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच मुरादाबाद (उ.प्र.)
लेजर टाइपसैटिंग	:	कुमार कम्प्यूटर्स चांदपुर (बिजनौर) उ.प्र.
मुद्रक	:	आर.के.ऑफसैट नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

26. हिन्दी दशा और दिशा 168
– डॉ0 मंजु रस्तौगी
27. संगोष्ठी का विषय है– 'हिन्दी : दशा और दिशा' 173
– डॉ0 बीना कुमारी नायर बी.जी.
28. भूमंडलीयकरण मीडिया और हिन्दी 176
– डॉ0 सविता डी.
29. हिन्दी की दशा और दिशा 181
– डॉ0 ए. तस्लीम बानु
30. हिन्दी की दशा और दिशा 187
–एन गुरूमूर्ति
31. हिन्दी की दशा और दिशा 201
– डॉ0 गोपीशंकर गुप्त
32. राजभाषा हिंदी के प्रति आत्मविश्वास 204
– डॉ. अनिता पाटिल
33. हिन्दी दशा और दिशा 208
– डॉ. मिथलेश सिंह
34. विश्व पटल पर हिन्दी 216
– डॉ. ऋषिपाल
35. विश्व बाजार में हिंदी का महत्व 224
– डॉ0 अर्चना आर्य
36. अमेरिका में हिन्दी के बढ़ते कदम 230
– डॉ0 सुशीला मोहनका
37. विश्व पटल पर हिन्दी 236
– डॉ. भगवान सिंह 'भास्कर'
38. भूमंडलीकरण के दौर में हिदी की अपेक्षाऐं 255
– डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी
39. विदेशों में भी पताका फहरा रही है हिन्दी 261
– कृष्ण कुमार यादव

"हिन्दी : दशा और दिशा"

डॉ. बीना कुमारी नायर, वी.जी.

प्रत्येक भाषा अपने में पूर्ण है। हरेक संस्कृति और सभ्यता को पनपने में भाषा का एक बहुत बड़ा हाथ होता है। उस संस्कृति एवं सभ्यता की आवश्यकताएँ पूर्ण करने में भाषा प्रयाप्त रूप से समर्थ होती है। इस नजरिये से देखें तो भारत की सभी भाषाएँ अपने-अपने स्थान पर सटीक और पर्याप्त हैं परंतु यदि कोई व्यक्ति अपनी सीमा पार कर दूसरे लोगों के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान करना चाहता है तो उसे एक अतिरिक्त भाषा की आवश्यकता पड़ती है।

स्वतंत्रता के पहले से ही महात्मा गांधी के उदार, व्यापक एवं दूरदर्शी आदर्श से प्रेरित होकर राष्ट्रभाषा का आंदोलन देश में आरंभ हुआ था। इस आंदोलन का परिणाम विभिन्न प्रदेशों की हिन्दी प्रचार संस्थाओं के रूप में हमारे सामने है। जिससे कालान्तर में हिन्दीतर प्रदेश की प्रजा हिन्दी से इस प्रकार अवगत हो जाए कि देश के सभी कार्य हिन्दी माध्यम से होने पर लोगों को कोई कठिनाई का सामना न करना पड़े। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि कुछ राजनीतिक दबाबों के कारण दक्षिण भारत में यह अनिवार्य शिक्षा तो न बन पाई फिर भी कुछ संस्थाएँ यह कार्य को सफल साबित करने के लिए आज भी कार्यरत हैं। जैसे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और उसकी प्रांतीय सभाओं के सेवाभाव से बहुत सारे लोग अपने आयु की परवाह किये बगैर हिन्दी की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दक्षिण भारत के उन हजारों अध्यापकों, हिन्दी सेवियों, शिक्षकों तथा साहित्य निर्माण में निरत अनेक व्यक्तियों को इसका श्रेय जाता है कि वे गांधी जी के सपने को साकार बनाने का प्रयास कर रहे हैं और बहुत हद तक सफल भी हो रहे हैं।